

二十四史



# 白話二十四史



● 本书编委会编 ● 第十册 ● 中国华侨出版社

# 目 录

## (第十册)

### 《魏书》·下

|                   |    |
|-------------------|----|
| 李平传 .....         | 3  |
| 崔光传 .....         | 6  |
| 甄琛传 .....         | 7  |
| 崔休传 .....         | 14 |
| 刘藻传(附刘绍珍传) .....  | 16 |
| 傅永传 .....         | 17 |
| 傅竖眼传(附傅融等传) ..... | 21 |
| 裴叔业传 .....        | 26 |
| 夏侯道迁传 .....       | 28 |
| 李元护传 .....        | 31 |
| 席法友传 .....        | 32 |
| 江悦之传 .....        | 33 |
| 李苗传 .....         | 34 |
| 奚康生传 .....        | 36 |
| 杨大眼传 .....        | 40 |
| 崔延伯传 .....        | 42 |
| 尔朱荣传 .....        | 45 |

|                      |     |
|----------------------|-----|
| 尔朱兆传 .....           | 59  |
| 尔朱世隆传 .....          | 62  |
| 尔朱天光传 .....          | 65  |
| 张烈传 .....            | 69  |
| 宋翻传 .....            | 70  |
| 辛雄传 .....            | 71  |
| 辛纂传 .....            | 74  |
| 高谦之传(附高子儒、高绪传) ..... | 76  |
| 高道穆传 .....           | 81  |
| 孙绍传 .....            | 85  |
| 张普惠传 .....           | 88  |
| 成淹传(附成霄传) .....      | 104 |
| 范绍传 .....            | 107 |
| 董绍传 .....            | 109 |
| 鹿念传 .....            | 110 |
| 张熠传 .....            | 114 |
| 朱瑞传 .....            | 115 |
| 叱列延庆传 .....          | 116 |
| 斛斯椿传 .....           | 117 |
| 贾显度传 .....           | 119 |
| 樊子鹄传 .....           | 120 |
| 贺拔胜传 .....           | 122 |
| 侯莫陈悦传 .....          | 124 |
| 侯渊传 .....            | 125 |
| 綦俊传 .....            | 127 |
| 山伟传 .....            | 128 |

|                  |     |
|------------------|-----|
| 李琰之传·····        | 130 |
| 祖莹传·····         | 131 |
| 常景传·····         | 133 |
| 冯熙传·····         | 138 |
| 高肇传(附高植传)·····   | 140 |
| 胡国珍传·····        | 142 |
| 陈奇传·····         | 144 |
| 刘献之传·····        | 145 |
| 孙惠蔚传·····        | 146 |
| 董征传·····         | 149 |
| 刁冲传·····         | 149 |
| 李业兴传·····        | 151 |
| 温子升传·····        | 155 |
| 赵琰传·····         | 157 |
| 王崇传·····         | 158 |
| 朱长生传·····        | 158 |
| 宋世景传(附宋季儒传)····· | 159 |
| 李洪之传·····        | 161 |
| 郾道元传·····        | 163 |
| 睦夸传·····         | 164 |
| 冯亮传·····         | 166 |
| 李谧传·····         | 167 |
| 殷绍传·····         | 169 |
| 江式传·····         | 170 |
| 徐謩传·····         | 175 |
| 王显传·····         | 177 |

|                     |     |
|---------------------|-----|
| 蒋少游传(附郭善明等传) .....  | 179 |
| 姚氏妇杨氏传 .....        | 181 |
| 荀金龙妻刘氏传 .....       | 181 |
| 王睿传 .....           | 182 |
| 赵脩传 .....           | 185 |
| 茹皓传 .....           | 188 |
| 侯刚传 .....           | 190 |
| 宗爱传 .....           | 193 |
| 赵黑传(附赵炽传) .....     | 194 |
| 刘腾传 .....           | 196 |
| 刘聪传 .....           | 198 |
| 石虎传(附石世等传) .....    | 201 |
| 慕容垂传 .....          | 205 |
| 苻坚传 .....           | 208 |
| 姚兴传 .....           | 211 |
| 司马德宗传(附司马德文传) ..... | 214 |
| 桓玄传 .....           | 220 |
| 冯文通传 .....          | 229 |
| 刘义隆传(附刘劭、刘骏传) ..... | 231 |
| 萧衍传 .....           | 238 |
| 沮渠牧犍传(附沮渠秉等传) ..... | 248 |
| 高句丽传 .....          | 251 |
| 勿吉传 .....           | 255 |
| 蠕蠕传 .....           | 257 |
| 高车传 .....           | 271 |
| 自序 .....            | 277 |

# 《北齐书》

|              |     |
|--------------|-----|
| 神武纪          | 287 |
| 文襄纪          | 305 |
| 文宣纪          | 308 |
| 废帝纪          | 310 |
| 孝昭纪          | 312 |
| 武成纪          | 317 |
| 后主纪          | 321 |
| 幼主纪          | 330 |
| 神武娄后传        | 333 |
| 上党王高涣传       | 335 |
| 安德王高延宗传      | 336 |
| 琅邪王高俨传       | 339 |
| 赵郡王高琛传(附高睿传) | 342 |
| 清河王高岳传       | 346 |
| 高思好传         | 350 |
| 窦泰传          | 351 |
| 尉景传          | 352 |
| 库士文传         | 353 |
| 段荣传          | 354 |
| 段韶传          | 355 |
| 斛律金传         | 362 |
| 斛律光传         | 365 |
| 孙腾传          | 371 |

|               |     |
|---------------|-----|
| 高隆之传          | 373 |
| 司马子如传         | 375 |
| 张琼传           | 379 |
| 斛律羌举传         | 379 |
| 尧雄传           | 381 |
| 宋显传           | 383 |
| 王则传           | 384 |
| 慕容绍宗传         | 385 |
| 薛修义传          | 387 |
| 叱列平传          | 389 |
| 步大汗萨传         | 390 |
| 慕容俨传          | 391 |
| 高乾传           | 394 |
| 封隆之传          | 403 |
| 李元忠传          | 405 |
| 卢文伟传          | 408 |
| 魏兰根传          | 411 |
| 崔陵传(附崔瞻、崔景凤传) | 414 |
| 孙搴传           | 419 |
| 陈元康传          | 420 |
| 杜弼传           | 423 |
| 张纂传           | 426 |
| 张亮传           | 427 |
| 张耀传           | 428 |
| 赵起传           | 429 |
| 徐远传           | 429 |

|      |     |
|------|-----|
| 王峻传  | 430 |
| 王紘传  | 431 |
| 薛琬传  | 433 |
| 元孝友传 | 434 |
| 崔暹传  | 436 |
| 高德政传 | 439 |
| 崔昂传  | 442 |
| 王昕传  | 444 |
| 王晞传  | 445 |
| 陆法和传 | 451 |
| 徐之才传 | 454 |
| 杨愔传  | 458 |
| 邢邵传  | 463 |
| 魏收传  | 465 |
| 崔季舒传 | 476 |
| 祖珽传  | 478 |
| 卢潜传  | 485 |
| 卢叔武传 | 488 |
| 阳休之传 | 489 |
| 封述传  | 493 |
| 儒林传  | 494 |
| 樊逊传  | 503 |
| 刘逖传  | 509 |
| 颜之推传 | 510 |
| 苏琼传  | 512 |
| 宋游道传 | 514 |

|       |     |
|-------|-----|
| 毕义云传  | 519 |
| 由吾道荣传 | 521 |
| 皇甫玉传  | 522 |
| 綦母怀文传 | 523 |
| 马嗣明传  | 523 |
| 和士开传  | 524 |
| 高阿那肱传 | 527 |
| 韩凤传   | 529 |

### 《周书》·上

|        |     |
|--------|-----|
| 文帝纪    | 533 |
| 孝闵帝纪   | 553 |
| 明帝纪    | 556 |
| 武帝纪    | 560 |
| 宣帝纪    | 586 |
| 静帝纪    | 593 |
| 阿史那皇后传 | 596 |
| 李皇后传   | 597 |
| 杨皇后传   | 597 |
| 朱皇后传   | 598 |
| 陈皇后传   | 598 |
| 元皇后传   | 599 |
| 尉迟皇后传  | 599 |
| 司马皇后传  | 600 |
| 宇文导传   | 600 |

|              |     |
|--------------|-----|
| 晋荡公宇文护传····· | 601 |
| 叱罗协传·····    | 610 |
| 冯迁传·····     | 612 |
| 齐炀王宇文宪传····· | 613 |
| 宋献公宇文震传····· | 621 |
| 卫刺王宇文直传····· | 621 |
| 赵僭王宇文招传····· | 622 |
| 代炁王宇文达传····· | 623 |
| 贺拔胜传·····    | 624 |
| 贺拔岳传·····    | 629 |
| 侯莫陈悦传·····   | 633 |
| 寇洛传·····     | 634 |
| 李弼传·····     | 635 |
| 李𪎭传·····     | 638 |
| 于谨传·····     | 639 |
| 于寔传·····     | 645 |
| 赵贵传·····     | 646 |
| 独孤信传·····    | 648 |
| 侯莫陈崇传·····   | 652 |
| 梁御传·····     | 656 |
| 若干惠传·····    | 657 |
| 怡峰传·····     | 659 |
| 刘亮传·····     | 660 |
| 王德传·····     | 661 |
| 王黑传·····     | 662 |
| 王思政传·····    | 664 |

|       |     |
|-------|-----|
| 达奚武传  | 668 |
| 达奚震传  | 671 |
| 侯莫陈顺传 | 672 |
| 豆卢宁传  | 673 |
| 宇文贵传  | 674 |
| 杨忠传   | 677 |
| 王雄传   | 682 |
| 王盟传   | 683 |
| 贺兰祥传  | 685 |
| 尉迟纲传  | 687 |
| 叱列伏龟传 | 689 |
| 阎庆传   | 689 |
| 尉迟迥传  | 691 |
| 王谦传   | 694 |
| 司马消难传 | 695 |
| 周惠达传  | 696 |
| 杨宽传   | 698 |
| 柳庆传   | 701 |
| 柳带韦传  | 705 |
| 苏绰传   | 707 |

# 魏书·下

原著 [北齐]魏收

主编 王欣

副主编 程国政 贺葵

参译者 [按姓氏笔划]

刘可立 肖竞 李家芸 胡宝友

龚威 彭晖 彭樱

# 懸針下

義 叔 遠 朝 遠 贈

欣 立 首 章 李 紫 雲 陸 定 文

會 報 書 一 卷 抄 五 十 二 冊 四

編 主 章 卷 四 卷 五 卷 六

生 辭 王 知

周 書 一 卷 五 十 二 冊 四

## 李平传

李平，字县定，顿丘人，彭城王李徽的长子。少年即有大度。等到长大，涉猎群书，喜好《礼》、《易》，很有文才。太和初年，朝廷拜授其为通直散骑侍郎，高祖待他的礼节相当厚重。李平频历大丧，居丧以孝称。后来以例降爵为彭城公。拜授太子中舍人，迁任散骑侍郎，舍人官职照旧，迁任太子中庶子。李平乘着侍从的机会从容请求治理一郡，高祖说：“卿你也在吏事上试试了。”拜授他为长乐太守，任上，政务清静，吏民归心。皇帝车驾南征，任李平兼冀州仪同开府长史，很有政绩，又除正长史，太守官职照旧。没多久，便行河南尹，权贵豪绅都很怕他。世宗即位，升任司徒左长史，行尹职务仍旧。不久以称转正尹，长史如故。

皇帝车驾准备到邺城，李平上表疏谏：“臣伏见己丑时的诏书，皇驾云轩銮辂，行幸有期，风服龙骖，驱驾近日。陛下将欲讲武淇阳，大习邺魏，驰骏马于绿竹之区，骋烈骑于漳、滏之域。这确为幽显同庆、人灵共悦的事情。但为臣愚见，私有不解。为什么呢？嵩京创构，洛邑始营，虽然年跨十载，但根基未成。代州民众迁居洛阳，始欲向尽，资产在迁移途中耗尽，牛畜在辗转路上死毙，攀太行之险，越长津之难，辛苦备至，才到京城，富裕的人犹且损财过半，贫家可以想见。加上连年从戎，老百姓来不及寻得养息之所，自从景明年间以来，少得休息。从事农耕的没能得到二年的粮食积储，建房的才有数间之屋，无人不勉力伊、瀍之间，参加皇宫建设。而今实在应该安定民心，劝农耕种，让国家有九年之粮，家家有水旱储备。如若再兴徭役，那就会所废甚多了。一夫从役，全家失业。现在又值秋禾满田，禾谷遍野时节，銮驾所经，腾践必定很多。陛下不如端居中央，坐招四海，耀武松原，礼射伊洛，士马无跋涉之劳、黎民有康哉之咏，岂不是件很美的事。”帝不从。下诏令李平以本官行相州事务。魏世宗到邺城，亲临

李平宅第，召见他的几个儿子。不久正除刺史，加授征虏将军。

李平劝农耕桑，修饰太学，考选通儒充任博士，选择五郡聪慧敏捷的孩子们受学，图画孔子以及七十二弟子的画像于学堂之上，亲自为之立赞。前任台使颇好搜刮民财，李平于是在客馆墙上画“履虎尾”、“践薄水”，下面注颂，以示诫止。朝廷加授他为平东将军，征拜长兼度支尚书，不久正尚书，领御史中尉。

冀州刺史、京兆王元愉在信都造反，帝任命李平为使持节、都督北讨诸军事、镇北将军，行冀州事以讨伐他。魏世宗亲临式乾殿，劳遣李平说：“元愉，朕的大弟，朕让他居守不疑之地，豺狼之心，没想到就发了，他想要上倾社稷，下残百姓。大义灭亲，夫岂能止。周公行之于古，朕也应当行之于今。朕委任你为专征之任，务必要应期摧灭。卿务必要克尽征战职守，不要辜负朕推心置腹的寄托。朕哪里想到今天说起这件事呢。”因之歔歔流泪。李平回答说：“臣元愉鬼迷心窍，大胆干出叛乱的事来。陛下您不觉得为臣不武，委以总督之任，而今大赦既行，便只应有征无战。倘若谁守迷不悟，便应当仰凭天威，激励将士，譬如太阳消散微露，巨海荡尽荧烛那样，天时人事，灭除道理昭然明了。如果他顿首军门，就把他交送大理寺，如有过不改，以待斩戮，则动用干戈，这是他自找其咎，与陛下无关。”

李平进军至经县，诸路大军汇集。夜晚有蛮兵数千人砍斫李平前营，流矢射到李平帐中，李平坚卧不动，不一会敌人就逃散了。于是军队进到冀州城南十六里处。敌人围攻济州军，拔去栅寨，填平沟堑，只差数尺沟就被填平了。诸将合战，无利而还，害怕再前进了。李平亲自来队伍中间，许以重赏，士兵于是又前进，大破叛贼。元愉当时从马上掉下来了，于是有一个人下马救他，阻止攻势力斗而死。李平乘胜追击，到了冀州城门，斩敌数万人，便开始围城烧门。元愉与百余名骑兵冲出城门逃走，李平派统军叔孙头追击敌人，在离信都十多里的地方捉住了元愉。冀州平定后，世宗派兼给事黄门侍郎、秘书丞元梵宣读帝旨慰劳。征回到京师之后，李平以本官领相州大中正。

李平一开始被尚书高肇、侍御史王显所恨，后来王显代李平为中尉，李平加散骑常侍，王显弹劾李平在冀州时隐截官家丁口，高肇又为之作证，启奏除李平名。延昌初年，帝诏恢复李平官爵，去除他平定冀州的功劳。一段时间以来良贱之人的诉讼，有很多拖延多年而得不到解决，李平启奏不问案情真伪，一律以景明年前为限，于是净讼平息。武川镇百姓饥荒，镇将任款请求贷粮没有得到允许，擅自打开粮仓赈恤灾民，有关部门以费散官粮的条律将他绳之以法，免去他的官爵。李平启奏说任款本意是在救济百姓，用意善良，世宗下诏原谅了任款。李平迁任中书令，尚书职仍旧。肃宗初年，转任吏部尚书，加授抚军将军。李平为政技巧高超，所在都有声誉，但他的急脾气妨碍了他。尚书令、任城王元澄启奏讲述李平平定冀州的功劳，请求朝廷赏赐他邑地。灵太后于是封他为武邑郡开国公，食邑一千五百户，缣帛二千五百匹。

这以前，萧衍派其左游击将军赵祖悦偷据西硖石，军力人数数万，逼迫寿春。镇南将领崔亮攻打，没拿下来，又与李崇闹了矛盾。帝诏李平以本官使持节、镇军大将军，兼尚书右仆射为行台，节度诸军，东西州也受他节制，如有乖异，以军法处置。诏李平长子李奖以通直郎职跟从，赐予李平缣帛百段、紫纳金装衫甲一领，赐予李奖缣布六十段、绛纳袄一领。父子并列，拜受家中，观者以之为荣耀。于是李奖率领骑步兵二千人奔赴寿春。李平巡视硖口内外，观察到其虚实的地方。严令李崇、崔亮，令其水陆皆备，刻期齐攻。李崇、崔亮心中害怕，不敢违令。连日交战，屡破敌军。安南将军崔延伯在下蔡架桥，以对付敌人援军。敌将王神念、昌义之等不能救援，赵祖悦据守孤独无援的城池。李平于是布置攻打，命令崔亮督步兵攻打城西，李崇率水军攻其东面，然后大军鼓噪，南北两面一拥而上。敌人慌了手脚，东西赴战，穷于应付。攻下外城之后，敌人将士相继归附。赵祖悦率领余部固保南城，彻夜攻守，到天亮敌人才降。斩杀赵祖悦，把他的头颅送到了洛阳，俘敌无数。因功李平迁任尚书左仆射，加授散骑常侍，将军如故。